



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 14

अंक : 01

सितम्बर, 2026

मूल्य : ₹2.00



मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

80वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास द्वारा दिये गये उद्बोधन के अंश

विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विधार्थियों को 80वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई। देश के स्वतंत्रता सेनानियों, अमर शहीदों और देश की आजादी के लिए बलिदान देने वाले वीरों को याद करने एवं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का दिवस है। आप सभी परस्पर सहयोग एवं समन्वय से कार्य करते हुए देश की विकास धारा में सहभागिता निभायें। हमारे लिए गौरव की बात है कि विश्वविद्यालय को वर्ष 2025-26 में कुल 4 पेटेंट, 3 डिजाइन पेटेंट एवं 2 कॉपीराइट भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा हासिल हुए हैं। विश्वविद्यालय के शल्य चिकित्सा विभाग ने अश्वों की सर्जरी में उपलब्धि हासिल करना अभूतपूर्व एवं अत्यंत गर्व की बात है। विश्वविद्यालय के चिकित्सा संकुल द्वारा पशुपालकों हेतु उच्च नैदानिक एवं चिकित्सा सुविधाओं को मुहैया करवाते हुए जटिल शल्य चिकित्सा द्वारा उपचारित करने का कार्य प्रशंसनीय है। विश्वविद्यालय के माईक्रोबॉयोलाजी एवं अन्य विभागों ने मिलकर लम्पी रोग वैक्सीन निर्माण के अन्दर बहुत सक्रिय सहयोग देकर ना सिर्फ एलएसडी वैक्सीन को बनाने के वक्त सहयोग किया बल्कि उस एलएसडी वैक्सीन को शीर्ष तक पहुंचाने में हमारे विश्वविद्यालय का बहुत बड़ा योगदान है। मैं, विधार्थियों से आह्वान करता हूँ कि वे बहुत संख्या में अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति लेवे तथा अपना शैक्षणिक विकास करें। उच्च शिक्षा हेतु शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय छात्रवृत्तियां हासिल करने वाले विद्यार्थियों को बधाई एवं शुभकामनाएं। कुलगुरु ने कहा कि पशुचिकित्सा शिक्षा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में नवीन शोध, आविष्कारों, ज्ञानवर्धक, कोशल तकनीक का हस्तांतरण कर हमें प्रदेश की उन्नति, कल्याण एवं अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देना होगा। मैं बड़े गर्व एवं विश्वास के साथ सभी शीर्ष स्तर के लोगों से इस विश्वविद्यालय का पक्ष रखने में सफल होता हूँ। मैं निवेदन करता हूँ कि इन लोकतान्त्रिक मूल्यों का जिसका मैंने जिक्र किया है उनको अपने जीवन में लाने का प्रयास करें तथा हमें स्वतंत्रता के पूर्व की परिस्थितियां एवं स्वतंत्रता के बाद की परिस्थितियों का आंकलन करें तभी हमें आजादी के मूल्य का पता चल सकेगा।

पुनः आप सभी को 80वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
जय हिन्द, जय भारत।

डॉ. सुमंत व्यास



राज्य स्तरीय स्वाधीनता दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर "एट होम" कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल जी शर्मा, माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुनराम जी मेघवाल एवं कुलगुरु श्री सुमंत व्यास



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी



विश्वविद्यालय समाचार

कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने ध्वजारोहण कर दी सलामी

देश के 80वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने ध्वजारोहण कर सलामी दी। कुलगुरु ने आजादी के अमर शहीदों, वीरों एवं देश की स्वाधीनता के लिए बलिदान देने वाले कर्मवीरों को याद किया। इस अवसर पर कुलगुरु ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया। स्वाधीनता दिवस के अवसर पर कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास व अन्य अधिकारियों द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में पौधारोपण किया गया।



मुख्य सचिव सहित अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा राजुवास प्रदर्शनी का अवलोकन

80वें राज्यस्तरीय स्वाधीनता दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर दिनांक 14 अगस्त, 2026 को महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर में वेटेनरी विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी स्टॉल का आयोजन किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित इस प्रदर्शनी में मुख्य सचिव, राजस्थान श्री वी. श्रीनिवास, पुलिस महानिदेशक श्री राजीव शर्मा, जिला कलेक्टर, बीकानेर श्री निशान्त जैन सहित कई गणमान्य अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। अवलोकन के दौरान वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री सुमंत व्यास ने मुख्य सचिव को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेश की देशी गौवंश के संवर्धन, उन्नयन व वैज्ञानिक तरीके से पालन एवं विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। इस प्रदर्शनी में देशी गौवंश कृषकों एवं पशुपालकों के लिए प्रकाशित साहित्य और उपयोगी प्रचार सामग्री का भी वितरण किया।



नशा मुक्ति पर माननीय प्रधानमंत्री के अभिभाषण का प्रसारण

“नशा मुक्त विकसित भारत अभियान” के तहत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 2 अगस्त को माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अभिभाषण का सीधा प्रसारण महाविद्यालय के फैंकल्टी हाउस में हुआ जिसे सामूहिक रूप से देखा और सुना गया। अपने संबोधन में माननीय प्रधानमंत्री ने युवाओं से आह्वान किया कि नशा केवल व्यक्ति का नहीं बल्कि परिवार, समाज एवं राष्ट्र के भविष्य का भी नाश करता है। विकसित भारत के निर्माण के लिए प्रत्येक युवा का नशामुक्त, स्वस्थ एवं जागरूक होना आवश्यक है। उन्होंने सभी युवाओं से नशे से दूर रहने तथा समाज में जन-जागरूकता फैलाने का संकल्प लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने वेटेनरी महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) में विद्यार्थियों को नशा मुक्ति हेतु शपथ दिलाई एवं विश्वविद्यालय के कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को नशा मुक्ति हेतु संकल्पित किया।



स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का ओरिएन्टेशन कार्यक्रम

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 21 अगस्त को नवागन्तुक स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का ओरिएन्टेशन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर शिक्षा के विभिन्न आयामों एवं उद्देश्यों से अवगत करवाया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विद्यार्थियों को स्नातक के पश्चात रोजगारोन्मुखी शिक्षा की जानकारी प्रदान करते हुए एवं विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार करते हुए स्वयं के विषय को मजबूत करने पर जोर दिया। कुलगुरु डॉ. व्यास ने छात्रों को शोध में गुणवत्ता विकसित करते हुए मानसिक ग्रहणशीलता बढ़ाने हेतु आह्वान किया। उन्होंने विद्यार्थियों को उच्च शिक्षण हेतु छात्रवृत्ति स्कीम एवं देश के ख्याति प्राप्त संस्थानों में शोध हेतु भी प्रेरित किया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण देते हुए अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विद्यार्थियों को पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से स्नातकोत्तर शिक्षा के विभिन्न नियमों की जानकारी प्रदान की एवं विद्यार्थियों को पी.जी. पाठ्यक्रम के दिशा निर्देशों को अक्षरशः पालन हेतु निर्देशित किया। अधिष्ठाता, वेटेनरी महाविद्यालय प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने विद्यार्थियों को सहयोगात्मक शोध हेतु महाविद्यालय की विभिन्न सुविधाओं के समुचित प्रयोग हेतु कहा। उन्होंने विद्यार्थियों को बहु विषयक शोध हेतु प्रेरित करते हुए स्वयं के कार्य पर सकारात्मकता रखने के लिए कहा।





डेयरी फार्मिंग पर सात दिवसीय उद्यमशीलता प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 01 से 07 अगस्त तक सात दिवसीय डेयरी फार्मिंग पर उद्यमशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन 7 अगस्त को किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पशुपालकों में उद्यमशीलता तथा पशुपालन से आर्थिक उत्थान करने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा कौशल विकास कार्यक्रम की पहल की गई है, जिसमें राज्य के विभिन्न जिलों से इच्छुक प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार अपना सके। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास में डेयरी फार्मिंग के आर्थिक सुदृढीकरण हेतु पशुफार्म में रिकार्ड संधारण, बायोगैस उपयोगिता, कृत्रिम गर्भाधान एवं वैज्ञानिक तकनीकों को अपना कर डेयरी फार्मिंग को आर्थिक स्वावलम्बी बनाने हेतु प्रोत्साहित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने डेयरी फार्मिंग के क्षेत्र में बुनियादी जानकारी प्रदान करते हुए कार्यक्रम का विस्तृत विवरण बताया और कहा कि सात दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को डेयरी फार्मिंग की विभिन्न पहलुओं एवं प्रबंधन के साथ-साथ डेयरी फार्मिंग के लिए सरकारी योजनाओं से अवगत करवाया गया तथा इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, कोड़मदेसर एवं बीछवाल तथा उरमूल डेयरी एवं लोटस डेयरी का भ्रमण करवाया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बीकानेर, हनुमानगढ़, जयपुर, नागौर जिले के 20 प्रशिक्षणार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण सदृशिका का वितरण किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. विजय बिश्नोई, डॉ. देवीसिंह एवं डॉ. संजय सिंह का सहयोग रहा।



राजुवास को मिला एक और पेटेंट

ऊंटनी के दूध में अन्य प्रजाति के पशु के दूध की मिलावट डी.एन.ए. कीट से संभव

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकों द्वारा ऊंटनी के दूध में गाय अथवा भैंस के दूध की मिलावट की पहचान के लिए अभिनव तकनीक विकसित की गई है, जिसे भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। यह पेटेंट डॉ. अमित कुमार पाण्डेय, डॉ. प्रमोद मोहता, प्रो. बी.एन. श्रृंगी, स्व. डॉ. सुनील माहेरचंदानी, डॉ. नरेंद्र सिंह राठौड़, डॉ. कृतिका गहलोत, डॉ. चैत्री शर्मा तथा डॉ. वेद प्रकाश के लम्बे समय से शोध परिणाम का प्रमाण है। ऊंटनी के दूध की बढ़ती मांग के साथ उसकी शुद्धता और प्रमाणिकता सुनिश्चित करने के लिए सरल, तीव्र एवं उपयोगी जांच विधियों की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित यह डी.एन.ए. किट तकनीक ऊंटनी के दूध में अन्य प्रजाति के दूध की मिलावट की पहचान की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित यह अनुसंधान प्रयोगशाला से आगे बढ़कर पशुपालकों, उपभोक्ताओं तथा संबंधित उद्योगों के लिए उपयोगी तकनीक के रूप में विशेष महत्व की साबित होगी। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने इस पेटेंट हेतु संबंधित वैज्ञानिकों को शुभकामनाएं और बधाई दी तथा भविष्य में शोध की गुणवत्ता एवं उपयोगिता बढ़ाने हेतु कहा।

खुदरा उर्वरक विक्रय प्राधिकार पत्र हेतु 15 दिवसीय प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा आयोजित खुदरा उर्वरक विक्रय प्राधिकार पत्र हेतु दिनांक 5-19 अगस्त, 2026 तक अनिवार्य 15 दिवसीय प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समापन समारोह के अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में प्राकृतिक खेती की माडल इकाई का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि प्रशिक्षित उर्वरक विक्रेता किसानों तक वैज्ञानिक एवं संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन की जानकारी पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने प्राकृतिक खेती को समय की आवश्यकता बताते हुए किसानों तक टिकाऊ एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि तकनीकों के प्रसार पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि एवं निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रतिभागियों को उर्वरकों के वैज्ञानिक उपयोग, गुणवत्ता नियंत्रण तथा वैधानिक प्रावधानों की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करते हैं। उन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यों की भूमिका को किसानों और पशुपालक तक नवीन तकनीकों के प्रभावी प्रसार का सशक्त माध्यम बताया। सहायक निदेशक कृषि (विस्तार) श्री रामप्रताप गोदारा ने कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं की उपलब्धता एवं संतुलित उर्वरक उपयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. सुरेश चंद कांटा ने प्रशिक्षण के उद्देश्य एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों से प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान का उपयोग किसानों के हित में करने का आह्वान किया। प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. अशोक चौधरी ने प्रशिक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।





पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा 1, 10 एवं 24 अगस्त को गांव 7 जेड़, भोजेवाला एवं भगवानसर गांवों में तथा 27 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 139 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 9, 17-18 एवं 20-21 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 31 अगस्त को केन्द्र परिसर में तथा 17 अगस्त को गांव बेरू में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इस शिविर में 42 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 21 अगस्त को केन्द्र परिसर में तथा 27 एवं 29 अगस्त को गांव जुड़वारा एवं पुंनगकला गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 75 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 7 अगस्त को केन्द्र परिसर में तथा 17 अगस्त को गांव पगारा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 73 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा 6 अगस्त को केन्द्र परिसर में तथा 14 अगस्त को गांव मामावली में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 68 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा 7, 14, 21 एवं 29 अगस्त को गांव हरियासर घरसोतन, न्यांगली, लाखलान एवं मेहरी राजवियां गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 84 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 5-19 एवं 21-25 अगस्त को केन्द्र परिसर में तथा 31 अगस्त को गांव रामसरा में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 84 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।



सफलता की कहानी

वैज्ञानिक बकरी पालन से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते भूपेन्द्र सिंह

श्रीगंगानगर जिले के 5 चक के रहने वाले भूपेन्द्र सिंह पुत्र श्री सूखदेव सिंह ने मेहनत, लगन एवं वैज्ञानिक प्रबंधन को अपनाकर बकरी पालन को एक सफल एवं लाभकारी व्यवसाय के रूप में स्थापित किया है। 12वीं तक शिक्षा प्राप्त करने वाले भूपेन्द्र सिंह ने पशुपालन के क्षेत्र में अपनी रुचि को व्यवसाय का रूप देते हुए व्यावसायिक स्तर पर बकरी पालन शुरू किया। प्रारम्भ में सीमित संख्या में बकरियों से शुरुआत की जिसमें 20 बकरियों को रखा जिनसे भूपेन्द्र सिंह ने अच्छी आमदनी प्राप्त की कुछ समय बाद वह पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से मिले और उनसे बकरी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसके बाद उन्होंने धीरे-धीरे अपने पशुधन की संख्या बढ़ाई जिनसे उनके पास लगभग 200 बकरियां हो गई इसके बाद इन्होंने राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM) स्कीम के तहत फाइल लगाकर 500 बकरियों का फार्म प्रारम्भ किया। इन्होंने 500 बकरियों के लिए 1 करोड़ रुपये का लोन लिया जिसके अन्तर्गत इनको 50 प्रतिशत अनुदान प्राप्त हुआ। इन्होंने अपना फार्म ग्रीन पोकेट के नाम से रजिस्ट्रेशन करवा रखा है। भूपेन्द्र सिंह बताते हैं कि बकरी पालन कम लागत में शुरू किया जा सकने वाला ऐसा व्यवसाय है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं एवं किसानों के लिए रोजगार और अतिरिक्त आय की अच्छी संभावनाएं हैं। उन्होंने बकरी पालन में केवल संख्या बढ़ाने के बजाय अच्छी नस्ल, संतुलित आहार, स्वच्छ आवास, नियमित टीकाकरण एवं समय-समय पर कृमिनाशक दवाओं के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया। भूपेन्द्र सिंह ने अपने फार्म पर बकरियों के लिए पर्याप्त खुला एवं हवादार स्थान उपलब्ध कराया है। नवजात भेड़ों, गर्भित बकरियों तथा अन्य बकरियों के लिए उचित देखभाल की व्यवस्था की जाती है। बकरियों को मौसम के अनुसार हरा एवं सूखा चारा तथा आवश्यकतानुसार संतुलित आहार उपलब्ध कराया जाता है। इससे पशुओं की वृद्धि, स्वास्थ्य एवं उत्पादन क्षमता में सुधार हुआ है। पशुओं के स्वास्थ्य को लेकर भी भूपेन्द्र सिंह काफी सजग रहते हैं। वे समय-समय पर बकरियों का स्वास्थ्य परीक्षण करवाते हैं तथा आवश्यकतानुसार टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवाओं का प्रयोग करते हैं। बीमार पशुओं को समय पर अलग रखकर उपचार की व्यवस्था की जाती है, जिससे अन्य पशुओं में बीमारी फैलने की संभावना कम होती है। भूपेन्द्र सिंह का मानना है कि बकरी पालन में सफलता के लिए वैज्ञानिक जानकारी बहुत जरूरी है। इसी कारण वे पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों से समय-समय पर पशु पोषण, नस्ल सुधार, टीकाकरण, कृमिनाशन, प्रजनन प्रबंधन एवं रोग नियंत्रण संबंधी जानकारी प्राप्त करते रहते हैं। आज लगभग 500 बटल नस्ल की बकरियों के साथ उनका फार्म क्षेत्र में व्यावसायिक बकरी पालन का एक अच्छा उदाहरण बन गया है। बकरियों एवं भेड़ों की बिक्री से उन्हें अच्छी आय प्राप्त हो रही है। बकरी के दूध एवं मांस की बाजार में निरंतर मांग होने के कारण इस व्यवसाय में भविष्य की भी अच्छी संभावनाएं हैं। यह अपने इस व्यवसाय से सालाना लगभग 45-50 लाख की आमदनी प्राप्त करते हैं। भूपेन्द्र सिंह की सफलता यह दर्शाती है कि यदि पशुपालक मेहनत, धैर्य और वैज्ञानिक तकनीक के साथ बकरी पालन करे तो यह व्यवसाय परिवार की आय बढ़ाने के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार का मजबूत माध्यम बन सकता है। वे अपने अनुभवों से आसपास के किसानों एवं युवाओं को भी वैज्ञानिक तरीके से बकरी पालन अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। भूपेन्द्र सिंह अपनी सफलता का श्रेय अपनी मेहनत, परिवार के सहयोग तथा पशुपालन से जुड़ी वैज्ञानिक जानकारी को देते हैं।



सम्पर्क: भूपेन्द्र सिंह

5 चक, रेलवे पावर स्टेशन टी पॉइंट रोड, श्रीगंगानगर (मो. 9251000400)



गायों में रूमन अवरोध: उत्पादकता में कमी और आर्थिक नुकसान

भारत में पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक मजबूत स्तंभ है और लाखों किसान अपनी आजीविका के लिए दूध उत्पादन पर निर्भर हैं। लेकिन कई बार कुछ ऐसी बीमारियाँ पशुओं में विकसित हो जाती हैं, जो धीरे-धीरे उनकी उत्पादकता को प्रभावित करती हैं और किसान को इसका पता भी देर से चलता है। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण समस्या है रूमन जिसे वास्तविकता में एक “भूक या छिपा हुआ खतरा” कहा जा सकता है। यह रोग सीधे-सीधे पाचन तंत्र को प्रभावित करता है, जिसके कारण पशु की कार्यक्षमता, स्वास्थ्य और दूध उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। गाय के पेट की संरचना चार भागों में विभाजित होती है—रूमन, रेटीकुलम, ओमेसम और एबोसम। इनमें से रूमन सबसे बड़ा भाग होता है, जिसे जुगाली थैली भी कहा जाता है। यही वह स्थान है जहाँ भोजन का प्राथमिक पाचन सूक्ष्मजीवों की सहायता से होता है। जब पशु संतुलित आहार लेता है, तो रूमन की क्रियाएँ सामान्य रूप से चलती रहती हैं और पाचन प्रक्रिया सुचारु रूप से होती है। लेकिन जब पशु को अत्यधिक सूखा, रेशा युक्त या अपचनीय पदार्थ खिलाया जाता है, या वह गलती से प्लास्टिक, पॉलीथीन या अन्य कचरा निगल लेता है, तो ये पदार्थ रूमन में जमा होने लगते हैं। धीरे-धीरे यह संचय इतना अधिक हो जाता है कि रूमन की सामान्य गतिशीलता कम हो जाती है और अंततः पाचन प्रक्रिया रुकने लगती है। यही स्थिति रूमन इम्पैक्शन (रूमन अवरोध) कहलाती है। रूमन इम्पैक्शन के होने में कई प्रबंधन संबंधी त्रुटियाँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ पशुओं को मुख्यतः सूखा चारा जैसे भूसा खिलाया जाता है और हरे चारे की उपलब्धता कम होती है, वहाँ इस रोग की संभावना अधिक रहती है। इसके अलावा, यदि पशुओं को पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ पानी नहीं मिलता, तो भी रूमन की सामग्री सूखकर कठोर हो जाती है, जिससे इम्पैक्शन का खतरा बढ़ जाता है। शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में यह समस्या और भी गंभीर हो जाती है, क्योंकि यहाँ पशु खुले में घूमते हुए प्लास्टिक, कचरा और अन्य अपचनीय वस्तुएँ निगल लेते हैं। खनिजों की कमी के कारण उत्पन्न पाइका व्यवहार भी इस रोग का एक महत्वपूर्ण कारण है, जिसमें पशु मिट्टी, कपड़ा या अन्य असामान्य वस्तुएँ खाने लगते हैं। इस रोग के लक्षण धीरे-धीरे विकसित होते हैं और प्रारंभिक अवस्था में इन्हें पहचानना थोड़ा कठिन हो सकता है। प्रभावित पशु में सबसे पहले भूख में कमी दिखाई देती है, जो बाद में पूरी तरह समाप्त भी हो सकती है। जुगाली की क्रिया कम हो जाती है या बंद हो जाती है, जो इस रोग का एक महत्वपूर्ण संकेत है। पशु का पेट भरा हुआ और कड़ा महसूस होता है, विशेष रूप से बाईं ओर रूमन क्षेत्र में। गोबर का निकलना कम हो जाता है या वह बहुत सूखा और कठोर हो जाता है। पशु सुस्त और कमजोर दिखाई देता है तथा उसकी गतिविधियाँ कम हो जाती हैं। दूध देने वाले पशुओं में दूध उत्पादन में स्पष्ट गिरावट देखी जाती है, जो किसानों के लिए सीधा आर्थिक नुकसान का कारण बनती है। यदि समय पर उपचार न किया जाए, तो स्थिति और गंभीर हो सकती है और पशु के जीवन को भी खतरा हो सकता है।

रूमन इम्पैक्शन का निदान मुख्यतः पशु चिकित्सक द्वारा क्लीनिकल जांच के आधार पर किया जाता है। इसमें रूमन की गतिशीलता को स्टेथोस्कोप की सहायता से सुना जाता है और पेट को हाथ से दबाकर उसकी स्थिति का आकलन किया जाता है। इसके साथ ही पशु के आहार और प्रबंधन के बारे में जानना भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। कुछ जटिल मामलों में, विशेष रूप से जब प्लास्टिक या अन्य विदेशी पदार्थ निगलने का संदेह हो, तो एक्स-रे या अल्ट्रासाउण्ड जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग भी किया जा सकता है।

उपचार की दृष्टि से यह रोग अपनी गंभीरता के अनुसार अलग-अलग तरीके से प्रबंधित किया जाता है। हल्के मामलों में दवाओं, तरल पदार्थों और रूमन की गतिशीलता बढ़ाने वाली दवाई के माध्यम से रूमन की सामग्री को नरम करके बाहर निकालने का प्रयास किया जाता है। रूमन की गतिशीलता बढ़ाने के लिए रूमेनोटोनिक्स का उपयोग भी किया जाता है। इसके साथ ही पशु को पर्याप्त मात्रा में पानी और संतुलित आहार देना आवश्यक होता है। लेकिन यदि स्थिति गंभीर हो जाए और रूमन में अत्यधिक मात्रा में कठोर या अपचनीय पदार्थ जमा हो जाए, तो रूमेनोटोमी नामक शल्य चिकित्सा करनी पड़ती है, जिसमें रूमन को खोलकर उसमें जमा सामग्री को सीधे बाहर निकाला जाता है। यह प्रक्रिया विशेषज्ञ पशु चिकित्सक द्वारा की जाती है और कई मामलों में पशु को जीवनदान देने में सहायक होती है।

रूमन इम्पैक्शन के कारण होने वाले आर्थिक नुकसान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। इस रोग के कारण दूध उत्पादन में कमी आती है, जिससे किसान की आय प्रभावित होती है। इसके अलावा, उपचार पर होने वाला खर्च, श्रम की हानि और गंभीर मामलों में पशु की मृत्यु भी आर्थिक नुकसान को और बढ़ा देती है। इसलिए यह आवश्यक है कि किसान इस रोग के प्रति जागरूक रहें और समय रहते उचित कदम उठाएँ। गायों में रूमन इम्पैक्शन के कारण आर्थिक प्रभाव स्पष्ट रूप से पशुपालक की आय पर पड़ता है। इसके कारण गाय की दूध उत्पादन क्षमता घट जाती है, जिससे रोज की आय में कमी आती है। दूध उत्पादन में गिरावट के कारण पशुपालक को आर्थिक अस्थिरता का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त इस रोग के उपचार में अतिरिक्त खर्च जैसे दवाईयाँ, पशु चिकित्सक की सेवाएँ तथा गम्भीर अवस्था में शल्य चिकित्सा शामिल होती हैं। ये सभी खर्च मिलकर पशुपालक पर आर्थिक भार को बढ़ा देते हैं।

इस प्रकार रूमन इम्पैक्शन न केवल पशु के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि पशुपालन व्यवसाय की लाभप्रदाता को भी कम कर देता है। यदि समय पर उपचार न किया जाए, तो रोग की स्थिति और अधिक गम्भीर हो सकती है, जिससे पशु की हानि होने के साथ-साथ अधिक आर्थिक नुकसान भी हो सकता है। रोकथाम के दृष्टिकोण से यह रोग पूरी तरह प्रबंधन पर निर्भर करता है और थोड़ी सी सावधानी, सही आहार प्रबंधन तथा नियमित देखभाल से इसकी रोकथाम आसानी से की जा सकती है। सबसे महत्वपूर्ण बात है संतुलित आहार प्रदान करना, जिसमें सूखे और हरे चारे का उचित अनुपात हो। पशुओं को हमेशा स्वच्छ और पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध कराना चाहिए, क्योंकि पानी की कमी इस रोग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अलावा, पशुओं को कचरे और प्लास्टिक से दूर रखना अत्यंत आवश्यक है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में। नियमित रूप से खनिज मिश्रण देने से पाइका जैसी समस्याओं को रोका जा सकता है। समय पर पशु चिकित्सक से जांच कराना और किसी भी असामान्य लक्षण पर तुरंत ध्यान देना भी इस रोग की रोकथाम में सहायक होता है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि रूमन इम्पैक्शन एक ऐसी समस्या है जो धीरे-धीरे पशु की उत्पादकता को प्रभावित करती है, लेकिन सही जानकारी और प्रबंधन के द्वारा इसे आसानी से नियंत्रित और रोका जा सकता है। यदि किसान अपने पशुओं के आहार, व्यवहार और स्वास्थ्य पर नियमित ध्यान दें, तो वे इस “छिपा हुआ खतरा” से बच सकते हैं और अपनी आय तथा पशुओं के स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सकते हैं।

डॉ. संध्या मोरवाल

सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर



बारिश के बाद पशुओं में बढ़ता है अन्तःपरजीवियों का खतरा

बारिश के बाद वातावरण में नमी और तापमान की अनुकूल परिस्थितियों के कारण पशुओं में आंतरिक परजीवियों विशेषकर कृमियों का संक्रमण बढ़ने का खतरा रहता है। दूषित चारागाह, पानी, चारा तथा मिट्टी के माध्यम से परजीवी अंडे एवं लार्वा पशुओं के शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। इससे पशुओं में दस्त, वजन कम होना, भूख में कमी, कमजोरी, खून की कमी तथा दूध एवं मांस उत्पादन में गिरावट जैसी समस्याएं हो सकती हैं। छोटे बछड़े, मेमने और बच्चे विशेष रूप से अधिक प्रभावित होते हैं। इसलिए बारिश के बाद पशुओं के आवास की स्वच्छता बनाए रखना, साफ पानी एवं गुणवत्तापूर्ण चारा उपलब्ध कराना, चरागाह प्रबंधन पर ध्यान देना तथा पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार समय-समय पर उचित कृमिनाशक दवा देना आवश्यक है। पशुओं में लगातार दस्त, कमजोरी या वजन कम होने जैसे लक्षण दिखाई देने पर बिना देरी किए पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। पशुओं में पाए जाने वाले आंतरिक परजीवी शरीर के अंदर रहकर उनके स्वास्थ्य वृद्धि और उत्पादन को प्रभावित करते हैं। इनमें मुख्य रूप से गोल कृमि, फीता कृमि, फेफड़ों के कृमि तथा फलूक शामिल हैं। बछड़े, मेमने, बच्चे और कमजोर पशु इनके संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

प्रमुख लक्षण: अन्तः परजीवियों से संक्रमित पशुओं में निम्न लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

- ❖ वजन एवं वृद्धि में कमी।
- ❖ भूख कम लगना या कभी-कभी सामान्य से अधिक खाना।
- ❖ दस्त लगना
- ❖ बालों का रूखा एवं बेजान होना
- ❖ कमजोरी और सुस्ती
- ❖ पेट फूलना
- ❖ खून की कमी तथा पीली श्लेष्मा झिल्ली
- ❖ जबड़े के नीचे सूजन
- ❖ दूध एवं मांस उत्पादन में कमी
- ❖ गंभीर संक्रमण में मृत्यु भी हो सकती है।

संक्रमण कैसे फैलता है: परजीवियों के अंडे या लार्वा संक्रमित पशुओं के मल के साथ बाहर निकलते हैं। दूषित चारा, पानी, चरागाह और मिट्टी के माध्यम से दूसरे पशु संक्रमित हो सकते हैं। नमी युक्त मौसम में कई परजीवियों का विकास तेजी से होता है।

पशुओं को अन्तः परजीवियों से कैसे बचाएं:

- ❖ **नियमित कृमिनाशक उपचार करें:** पशुचिकित्सक की सलाह से उचित कृमिनाशक दवा का प्रयोग करें। सभी पशुओं



को बिना आवश्यकता के बार-बार एक ही दवा देना उचित नहीं है, क्योंकि इससे दवा-प्रतिरोध की समस्या बढ़ सकती है।

- ❖ **पशुओं के आवास की नियमित सफाई करें:** गौशाला को साफ और सूखा रखें तथा मल-मूत्र को नियमित रूप से हटाएं।
- ❖ **स्वच्छ पानी और चारा दें:** पशुओं को साफ पानी दें और चारे को मल से दूषित होने से बचाएं।
- ❖ **चरागाह का उचित प्रबंधन करें:** अत्यधिक चराई से बचे और जहां तक संभव हो चरागाहों का रोटेशन करें। गीले एवं अत्यधिक संक्रमित क्षेत्रों में पशुओं को लंबे समय तक चराने से बचें।
- ❖ **नए पशुओं की जांच करें:** नए पशु को झुंड में शामिल करने से पहले पशुचिकित्सक से स्वास्थ्य एवं परजीवी संक्रमण की जांच करवाएं।
- ❖ **कमजोर और युवा पशुओं पर विशेष ध्यान दें:** बछड़े, मेमने और बच्चे परजीवी संक्रमण से जल्दी प्रभावित हो सकते हैं। इनके वजन, वृद्धि और स्वास्थ्य की नियमित निगरानी करें।
- ❖ **आवश्यकता होने पर गोबर की जांच करवाएं:** पशुचिकित्सालय या प्रयोगशाला में गोबर की जांच द्वारा परजीवी अंडों की पहचान कराई जा सकती है। इससे उचित उपचार एवं नियंत्रण योजना बनाने में मदद मिलती है।

याद रखें: कृमिनाशक दवा केवल लक्षण देखकर नहीं, बल्कि पशु की उम्र, प्रजाति, वजन, परजीवी के प्रकार और स्थानीय संक्रमण की स्थिति को ध्यान में रखकर पशुचिकित्सक की सलाह से दें। समय पर पहचान, स्वच्छता, उचित चरागाह प्रबंधन और वैज्ञानिक कृमिनाशक कार्यक्रम अपनाकर पशुओं को अन्तः परजीवी से काफी हद तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया

वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर



भेड़ और बकरी पालन में डिजिटल उपकरणों का उपयोग

भेड़ एवं बकरी पालन भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बकरी को गरीब आदमी की गाय भी कहा जाता है, क्योंकि इससे कम लागत में अच्छा आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान समय में कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इन्हीं तकनीकों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) एक महत्वपूर्ण तकनीक है। यह ऐसी प्रणाली है जो मशीनों को मनुष्यों की भाँति सीखने, सोचने तथा निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। भेड़ एवं बकरी पालन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग रोगों की शीघ्र पहचान, बेहतर प्रबंधन, उत्पादन वृद्धि, मृत्यु दर में कमी तथा अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

भेड़-बकरी पालन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रमुख उपयोग

❖ **पशुओं की पहचान**— डिजिटल तकनीक के माध्यम से प्रत्येक पशु की अलग पहचान बनाई जाती है। पशुओं की पहचान के लिए उपयोग होने वाले उपकरण जैसे आरएफआईडी टैग (रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन), इलेक्ट्रॉनिक ईयर टैग, क्यू आर कोड टैग इत्यादि इन उपकरणों के उपयोग से पशु की आयु, नस्ल और स्वास्थ्य का रिकॉर्ड सुरक्षित रहता है। चोरी या पशु के खो जाने की संभावना कम होती है एवं प्रजनन एवं टीकाकरण की जानकारी आसानी से मिलती है।

❖ **स्वास्थ्य निगरानी**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सेंसर और स्मार्ट कॉलर, फिटनेस ट्रैकर भेड़-बकरी के शरीर की गतिविधियों पर नजर रखते हैं। इनसे शरीर का तापमान, हृदय गति, खाने-पीने की आदत, चलने-फिरने की गतिविधि, बीमारी के शुरुआती लक्षण इत्यादि का पता लगाया जा सकता है। यदि कोई भेड़-बकरी बीमार होती है तो सिस्टम मोबाइल पर अलर्ट भेज देता है जिससे बीमारी की जल्दी पहचान, उपचार में आसानी और मृत्यु दर में कमी आदि में सहायता मिलती है।

❖ **रोग पहचान प्रणाली**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता कैमरा और इमेज प्रोसेसिंग तकनीक से भेड़-बकरी की तस्वीर देखकर बीमारी को पहचाना जा सकता है जैसे पीपीआर, खुरपका-मुंहपका रोग, त्वचा रोग एवं निमोनिया इत्यादि रोगों के लक्षणों का विश्लेषण करके संभावित रोग बताता है जिससे समय पर इलाज, संक्रमण को फैलने से रोकना एवं दवा खर्च भी कम हो सकता है।

❖ **स्मार्ट फीडिंग सिस्टम**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित फीडिंग मशीन, फीड कैलकुलेटर मोबाइल एप्लीकेशन, स्वचालित फीडर भेड़-बकरी की उम्र, वजन और स्वास्थ्य के अनुसार संतुलित आहार बताता है। सिस्टम यह तय करता है कि कितनी मात्रा में चारा देना है, कौन सा पोषक तत्व कम है, किस भेड़-बकरी को विशेष आहार चाहिए जिससे चारे की बचत, तेजी से वजन वृद्धि, दूध उत्पादन में वृद्धि होती है।

❖ **वजन मापन और विकास निगरानी**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता कैमरा और सेंसर की मदद से बिना छुए भेड़-बकरी का वजन मापा जा सकता है जिसका उपयोग वृद्धि दर जानना, सही समय पर बिक्री, पोषण की स्थिति का मूल्यांकन जानने में किया जाता है जिससे समय की बचत, सटीक डेटा, बेहतर प्रबंधन किया जा सकता है।

❖ **प्रजनन प्रबंधन**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक से भेड़-बकरी के हीट (ताव) में आने का सही समय का पता लगाया जा सकता है। मोबाइल ऐप और कंप्यूटर सॉफ्टवेयर प्रजनन संबंधी रिकॉर्ड रखने में मदद करते हैं। सेंसर द्वारा शरीर का तापमान, गतिविधि स्तर, व्यवहार परिवर्तन का पता लगाया जा सकता है जिससे गर्भधारण दर में बढ़ोतरी, बेहतर नस्ल सुधार,

उत्पादन क्षमता में वृद्धि आदि हो सकती है। प्रजनन प्रबंधन संबंधी उपकरण जैसे— पेडोमीटर, ट्रांसरेक्टल अल्ट्रासाउंड तकनीक, एस्ट्रस सिंक्रोनाइजेशन तकनीक इत्यादि।

❖ **दूध उत्पादन विश्लेषण**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक दूध देने वाली भेड़-बकरी के उत्पादन का रिकॉर्ड रखती है। इसमें सिस्टम बताता है कि कौन सी भेड़-बकरी अधिक दूध देती है, किसका उत्पादन घट रहा है और पोषण की कमी कहाँ है। इस तकनीक से उच्च उत्पादक भेड़-बकरी का चयन, व्यवसायिक लाभ में वृद्धि आदि में सहायता मिलती है।

❖ **स्मार्ट फार्म प्रबंधन**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित मोबाइल ऐप और सॉफ्टवेयर पूरे फार्म का रिकॉर्ड रखते हैं जैसे टीकाकरण, दवाइयाँ, प्रजनन, दूध उत्पादन, खर्च और आय आदि के रिकॉर्ड। इस मोबाइल ऐप और सॉफ्टवेयर का लाभ यह है कि इससे डिजिटल रिकॉर्ड, बेहतर योजना का लाभ और प्रबंधन आसान हो जाता है।

❖ **मौसम पूर्वानुमान और पर्यावरण नियंत्रण**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता मौसम की जानकारी के आधार पर फार्म प्रबंधन में सहायता करता है जैसे अधिक गर्मी होने पर अलर्ट करना, बारिश की चेतावनी देना, तापमान नियंत्रण करने में सहायता करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक का लाभ यह है कि इससे हीट स्ट्रेस को कम किया जा सकता है जिससे उत्पादन प्रभावित नहीं होता है।

❖ **चोरी और सुरक्षा प्रबंधन**— कृत्रिम बुद्धिमत्ता कैमरा और फेस रिकॉग्निशन तकनीक से फार्म की सुरक्षा की जा सकती है। इसके उपयोग से रात में निगरानी, संदिग्ध गतिविधि की पहचान और पशुओं की गिनती की जा सकती है।

❖ **जीपीएस और निगरानी प्रणाली**— जीपीएस आधारित तकनीक से चराई के दौरान पशुओं की स्थिति का पता लगाया जा सकता है। जिससे पशुओं की सुरक्षा में बढ़ोतरी, चरागाह प्रबंधन में आसानी और पशुओं के खोने की संभावना कम होती है।

❖ **बाजार और मूल्य विश्लेषण**— डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसान अपने पशु एवं उत्पाद बेच सकते हैं। जैसे— सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन पशु बाजार जिससे भेड़-बकरी की कीमत, मांग और आपूर्ति, बिक्री का सही समय का पता लग जाता है जिससे उचित मूल्य प्राप्त हो सकता है और नुकसान कम होता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भेड़-बकरी पालन की चुनौतियाँ— भेड़-बकरी पालन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग में अधिक प्रारम्भिक लागत, तकनीकी जानकारी की कमी, इंटरनेट एवं विद्युत आपूर्ति की समस्या, ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का अभाव तथा उपकरणों के रखरखाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता भेड़-बकरी पालन के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है। इसके माध्यम से रोग नियंत्रण, प्रजनन प्रबंधन, पोषण, सुरक्षा तथा उत्पादन क्षमता में सुधार संभव है। यह तकनीक किसानों की मेहनत कम करने तथा आय बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रही है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भेड़-बकरी पालन भारत के ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भर पशुपालन का महत्वपूर्ण आधार बनेगा।

“स्मार्ट तकनीक अपनाएँ आधुनिक भेड़-बकरी पालन को सफल बनाएँ।”

डॉ. कुमुमलता झाझड़िया
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर



पशुधन से समृद्धि की ओर: राजस्थान के पशु मेलों की भूमिका



राजस्थान अपनी समृद्ध पशुधन संपदा, विविध देशी नस्लों तथा गौरवशाली पशुपालन परंपरा के लिए देशभर में विशिष्ट पहचान रखता है। प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन कृषि के साथ-साथ किसानों की आय, आजीविका एवं आर्थिक सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार है। इस दृष्टि से राजस्थान में आयोजित होने वाले पशु मेले पशुधन के



क्रय-विक्रय एवं आदान-प्रदान के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राजस्थान के प्रमुख पशु मेलों में पुष्कर पशु मेला, श्री वीर तेजाजी पशु मेला, परबतस, श्री रामदेव पशु मेला, नागौर, मल्लीनाथ पशु मेला, तिलवाड़ा, गोगामेड़ी पशु मेला हनुमानगढ़, बलदेव पशु मेला, मेड़ता सिटी, श्री महाशिवरात्रि पशु मेला, करौली, श्री जसवंत प्रदर्शनी एवं पशु मेला, भरतपुर, गोमती सागर पशु मेला, झालावाड़ तथा चन्द्रभागा पशु मेला, झालावाड़ प्रमुख हैं। इन मेलों में विभिन्न क्षेत्रों से किसान एवं पशुपालक उत्तम नस्ल एवं उपयोगी पशुओं के साथ भाग लेते हैं। इससे पशुधन का आदान-प्रदान होता है तथा किसानों को अपनी स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप बेहतर एवं अधिक उत्पादक पशुओं के चयन का अवसर प्राप्त होता है। राजस्थान राठी, थारपारकर, नागौरी, कांकरेज सहित अनेक महत्वपूर्ण देशी पशु नस्लों का प्रमुख क्षेत्र है। पशु मेले इन नस्लों को बाजार एवं पहचान उपलब्ध कराने के साथ इनके संरक्षण एवं संवर्धन में भी योगदान देते हैं। वैज्ञानिक प्रजनन, संतुलित पोषण, पशु स्वास्थ्य सेवाओं एवं आधुनिक पशुपालन तकनीकों को बढ़ावा देकर इन नस्लों की उत्पादक क्षमता का बेहतर उपयोग किया जा सकता है। पशु मेले किसानों तक वैज्ञानिक पशुपालन संबंधी जानकारी पहुंचाने का भी प्रभावी माध्यम हैं। साथ ही, पशु मेलों से परिवहन, चारा, पशु उपकरण, औषधि एवं अन्य ग्रामीण व्यवसायों को भी गति मिलती है, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं आय के अवसर बढ़ते हैं। अतः पशु मेले केवल पशुओं के क्रय-विक्रय के आयोजन नहीं, बल्कि पशुधन विकास, नस्ल संरक्षण, ज्ञान प्रसार एवं ग्रामीण आर्थिक सशक्तीकरण के महत्वपूर्ण मंच हैं। यदि इन्हें वैज्ञानिक पशुधन प्रबंधन, गुणवत्तापूर्ण पशु स्वास्थ्य सेवाओं, पारदर्शी बाजार व्यवस्था एवं आधुनिक तकनीकों से प्रभावी रूप से जोड़ा जाए, तो ये किसानों की आय वृद्धि एवं पशुपालक परिवारों की आर्थिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। समृद्ध पशुधन, वैज्ञानिक पशुपालन और सुदृढ़ बाजार व्यवस्था के समन्वय से ही समृद्ध किसान एवं सशक्त ग्रामीण अर्थव्यवस्था का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

“धीरे री बात्यां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी

केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन

1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया

संपादक

डॉ. संजय सिंह

डॉ. वैशाली

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

☎ 0151-2200505

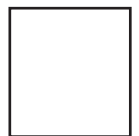
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया